राज्य अध्याय 45

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हांथों में सौंपे।

2	**साझा करें** (20 मिनट) *[शांत समय]* **दानिय्येल 2, 3, 4 और 6**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें (या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (दानिय्येल 2, 3, 4, और 6) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करें** (5 मिनट) *[रोमियों में प्रमुख वचन]* **(18) रोमियों 13:8**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन करें।***

(18) रोमियों 13:8. "आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।"

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट) *[यीशु के दृष्टान्त]* **दस कुंवारियां**

मत्ती अध्याय 25:1-13 में "दस कुँवारियों का दृष्टान्त"
परमेश्वर के राज्य में जागते रहने
के बारे में शिक्षा देता है।

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों को उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेंगे (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

परमेश्वर के राज्य में जागते रहने के बारे में तीन दृष्टान्त :

- मत्ती 25:1-13 में दस कुँवारियों का दृष्टान्त।

- मत्ती 24:32-35 में अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त।
- लूका 12:35-40 में जागते रहने वाले दास का दृष्टान्त।

क. दस कुँवारियों का दृष्टान्त

पढ़ें मत्ती 25:1-13.

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगे।
चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े वास्तविक तथ्य कौन से हैं?
ध्यान दें।

एक यहूदी विवाह का चित्रण। बाइबल में, विवाह समारोह एक सामाजिक और धार्मिक पर्व था। इसके अलावा, यह एक *सार्वजनिक* पर्व भी था। बाइबल में विवाह कभी भी एक गुप्त मामले के रूप में नहीं था; इसे हमेशा ही एक सार्वजनिक कार्यक्रम के रूप मनाया गया!

पुराने समय में, "एक पत्नी को पाना", "सगाई करना" या "विवाह करने का निर्णय लेना" (Greek: mnésteuó), पूरी तरह से एक पारिवारिक मामला था। जिसमें यह भी शामिल है :

- विवाह के लिए साथी का चुनाव (उत्पत्ति 21:21)
- कभी-कभी, दुल्हन के परिवार को प्रतिपूर्ति या उपहार देना (उत्पत्ति 29:18, 34:12)
- दूल्हा और दुल्हन को उपहार देना (उत्पत्ति 24:59,61, 1 राजा 9:16)

विवाह समारोह एक सार्वजनिक कार्यक्रम था। इसमें कुछ निम्नलिखित तत्व शामिल थे। दूल्हा और दुल्हन ने विवाह के कपड़े पहने थे (भजन संहिता 45:13-14)। दूल्हा और दुल्हन के मित्र उनके साथ थे (भजन 45:14, यूहन्ना 3:29)। एक बारात थी (मत्ती 25:1-14) और एक विवाह की दावत थी, जो कभी-कभी पूरे हफ्ते चलती थी (मत्ती 22:1-14, यूहन्ना 2:1-10, न्यायियों 14:17)। विवाह समारोह का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा एक विवाह की वाचा थी जिसमें परमेश्वर स्वयं एक गवाह थे (मलाकी 2:14, नीतिवचन 2:17, यहेजकेल 16:8)! सदियों से, मसीहियों ने भी परमेश्वर, अपने परिवारों, दोस्तों और मसीही भाइयों और बहनों की उपस्थिति में अपने विवाह समारोह को सार्वजनिक रूप से आयोजित किए।

विवाह की रस्म के बाद ही विवाह संपन्न होता था (उत्पत्ति 29:21-23, व्यवस्थाविवरण 22:13-21; इब्रानियों 13:4)।

कुँवारियाँ। कुँवारियाँ कौन थीं? क्या वे दुल्हन के साथ या मित्रों और पड़ोसियों की बेटियाँ थीं? विवाह का उत्सव कहाँ हुआ -दुल्हन या दूल्हे के घर पर? जब दूल्हे से मिलने के लिए धूम मची, तो कुँवारियाँ कहाँ थीं? क्या वे कहीं बाहर खुले में, सड़क के किनारे या घर के अन्दर थीं? क्या वे दुल्हन के घर पर थीं या पहले से ही दूल्हे के घर पर थीं? उनका समारोह क्या था? क्या वे दूल्हे और उसके मित्रों से मिलने के लिए बाहर गयीं जब वे दुल्हन को लेने के लिए उसके घर आए और फिर एक भव्य बारात में दूल्हे के घर लौट आए? या वे पहले से ही दुल्हन के साथ दूल्हे के घर पर थीं और सभी आमंत्रित मेहमान दूल्हे के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे?

नए नियम के सर्वश्रेष्ठ यूनानी ग्रंथों में कुछ भी ऐसा नहीं है जो दूल्हे के साथ आने वाली बारात के बारे में बता सके। इसमें दुल्हन का उल्लेख भी नहीं है। इसलिए यह मान लेना अधिक उचित है कि दुल्हन पहले से ही उस स्थान पर थी जहाँ विवाह होने वाला था। वह या तो अपने माता-पिता के घर पर थी या दूल्हे के घर पर। चूंकि दूल्हे के घर पर होना अधिक सामान्य था, इसलिए हम इसे मान लेंगे। इस प्रकार, दुल्हन, आमंत्रित मेहमान और दस कुँवारियाँ सभी दूल्हे के घर पर एकत्रित हुईं, जो या तो उसका अपना नया घर था या उसके माता-पिता का। सब कुछ तैयार था, सिवाय इसके कि दूल्हा अभी तक नहीं आया था!

वह दूल्हे से मिलने के लिए गयीं। पद 1 में यह कहानी का सारांश है, क्योंकि वे वास्तव में पद 10 में दूल्हे से मिलने के लिए निकली थीं। हालाँकि मूल रूप से सभी दस कुँवारियों का इरादा था कि वे बाहर जाएँ और दूल्हे से मिलें, वास्तव में कहें तो, केवल पाँच बुद्धिमान कुँवारियाँ दूल्हे से मिलने के लिए बाहर गयीं, क्योंकि पाँच मूर्ख कुँवारियाँ तेल खरीदने के लिए गई थीं।

मशालें। ये आमतौर पर मिट्टी से बनी होती थीं। एक मशाल में शीर्ष पर तीन छेद के साथ तेल के लिए एक ग्राही होता था : एक तेल डालने के लिए, एक हवा को बाहर निकलने के लिए और एक बाती के लिए। जब जुलूस में इन मशालों का उपयोग किया जाता था, तो उन्हें लकड़ी के खम्भे के जरिए मशालों की तरह रखा जाता था। जब पहली बार दूल्हा आ रहा था तो उन्होंने धूम सुनी।

विवाह का घर। जब बारात घर पहुँची तो सभी मेहमान अन्दर गए और दरवाज़ा बन्द कर दिया गया। इस समय पर, दृष्टान्त की कहानी सामान्य परिस्थितियों की तुलना में बहुत अधिक गंभीर हो जाती है। जब पाँच मूर्ख कुँवारी वहाँ पहुँची, तब तक बहुत देर हो चुकी थी और उन्हें प्रवेश करने से मना कर दिया गया था। सामान्य विवाह भोज में, उन्हें प्रवेश से मना नहीं किया जाएगा। लेकिन यह एक गंभीर संदेश के साथ यीशु का दृष्टान्त है। उसकी कहानी में, दरवाज़ा बिल्कुल बन्द था! और दूल्हे ने यह स्वीकार करने से इनकार कर दिया कि वह उन्हें जानता था!

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

परिचय। दृष्टांत की "कहानी" का संदर्भ "स्थान" और "दृष्टांत की व्याख्या या अनुप्रयोग" से मिलकर हो सकता है। दृष्टांत का स्थान दृष्टान्त को बताने के *अवसर* को बता सकती है, या दृष्टांत को बताने के समय *परिस्थितियों* का वर्णन कर सकती है। स्थान आमतौर पर दृष्टांत की कहानी से *पहले* पाया जाता है और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग आमतौर पर दृष्टांत की कहानी *के बाद* पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का स्थान, कहानी और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती 24:1-23 में पायी जाती हैं।

यह पिछले दृष्टान्तों के समान ही है : अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त और विश्वासयोग्य और अविश्वासयोग्य दास का दृष्टान्त।

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 25:1-12 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या या उसका अनुप्रयोग मत्ती 25:13 में लिखी हुआ है।

दृष्टान्त का मुख्य सन्देश सतर्क रहना और लगातार जागते रहना है। क्यों? क्योंकि कोई भी यीशु मसीह के दूसरे आगमन के "उस दिन और उस घड़ी" को नहीं जानता (मत्ती 24:36,42-44, 50)! वह अचानक और अप्रत्याशित रूप से आएँगे, जैसे

"रात को चोर आता है" (1 थिस्सलुनीकियों 5:1-4)।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय ज़रूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र-बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त को एक रूपक (उपनिवेशवाद) के रूप में मानना।

इस दृष्टान्त का अक्सर अलौकिक व्याख्या द्वारा दुरुपयोग किया गया है। कुछ अनुवादकों ने, हालाँकि उन्होंने अन्य बहुत मूल्यवान शिक्षाएँ लिखी हैं, दृष्टान्त के एक अलंकारिक अर्थ को निकाला, जिसे संदर्भित नहीं किया जा सकता है और इसके परिणामस्वरूप इसे अस्वीकार किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए:

अगस्टिन (354-430 A.D.) ने इस प्रकार दृष्टान्त की व्याख्या की। संख्या "पाँच" शरीर में आत्मा का प्रतिनिधित्व करती है क्योंकि आत्मा पाँच इंद्रियों का उपयोग करती है। पाँच इन्द्रियाँ ही एहसास करने का एकमात्र तरीका है। इस प्रकार, जो कोई भी गैरव्यवस्थायी रूप से देखने, सुनने, सूंघने, चखने और छूने से परहेज करता है, उसे "कुँवारी" नाम मिलता है। लेकिन यह सिर्फ एक कुँवारी होने के लिए पर्याप्त नहीं है; उनके पास "मशाल" भी होनी चाहिए, जो अच्छे कामों की निशानी है। यद्यपि बुद्धिमान और मूर्ख दोनों कुँवारी लड़कियों के पास मशालें थीं, केवल बुद्धिमान कुँवारी लड़कियों के पास ही "तेल" था, जो प्यार का प्रतिनिधित्व करता है और जो 1 कुरिन्थियों अध्याय 13 के अनुसार सबसे अच्छा तरीका है।

मार्टिन लूथर (1483-1546) ने दृष्टान्त की व्याख्या इस प्रकार की। पाँच मूर्ख कुँवारी लड़कियों को अस्वीकार कर दिया गया था, इसलिए नहीं कि उन्होंने सेवा नहीं की, बल्कि इसलिए कि उन्होंने "तेल" के बिना सेवा की, जो परमेश्वर के अनुग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने अपने स्वयं के संसाधनों के आधार पर सेवा की, न कि परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा। उन्होंने परमेश्वर की महिमा नहीं, बल्कि स्वयं की महिमा को खोजा।

रिचर्ड सी. ट्रेंच (1807-1886) ने दृष्टान्त की व्याख्या इस प्रकार की। "मशालें" मसीही जीवन में जो कुछ भी बाहर का है, उसका प्रतिनिधित्व करती हैं, जबकि "तेल" जो कुछ भी भीतर या आत्मिक है, का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए, रोमियों की पुस्तक में, मशालें व्यवस्था के कार्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जबकि तेल उस विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है जो बचाता या न्याय करता है। लेकिन याकूब की पुस्तक में, मशालें विश्वास के बाहरी आवरण का प्रतिनिधित्व करती हैं, जबकि तेल उन कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है जो सच्चे विश्वास का परिणाम हैं।

इन सभी रूपक व्याख्याओं को अस्वीकार किया जाना चाहिए।

(2) प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण।

दस कुँवारियाँ। वे प्रासंगिक हैं, क्योंकि यीशु स्वर्ग के राज्य की तुलना उनके साथ करते हैं! पाँच बुद्धिमान कुँवारियाँ सच्चे मसीहियों का प्रतिनिधित्व करती हैं और पाँच मूर्ख कुँवारियाँ नाम के मसीहियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। सभी दस कुँवारियाँ इस वर्तमान दुनिया में एक साथ मिलकर रहती हैं। जबकि नाम के मसीही लोग तैयार या जागते नहीं रहते हैं, सच्चे मसीही उसके दूसरे आगमन पर यीशु मसीह की वापसी के लिए सतर्क और तैयार हैं! संख्या "दस" पृथ्वी पर एक पूर्ण संख्या है, लेकिन क्योंकि यीशु इसकी व्याख्या नहीं करते, इसलिए यह साबित नहीं किया जा सकता है कि यह उन मसीहियों की पूरी संख्या का प्रतिनिधित्व करता है जो कभी पृथ्वी पर रहते थे।

मशालें। यीशु मशालों को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। मशालें तेल की बत्ती और तेल डालने के लिए एक छेद और बाहर की ओर हवा को निकालने के लिए एक छेद से बने हुए थे। जुलूस के दौरान, इन मशालों को लकड़ी के खम्भे के द्वारा ऊपर तरह रखा जाता था।

तेल। यीशु तेल के प्रतीकात्मक अर्थ की व्याख्या नहीं करते। इसलिए हमें अटकलें नहीं लगानी चाहिए। तेल का उपयोग भविष्यद्वक्ताओं, याजकों और राजाओं का अभिषेक करने और घावों को ठीक करने के लिए एक दवा के रूप में किया जाता था।

यदि तेल का प्रतीकात्मक अर्थ है, तो यशायाह 61:1 के अनुसार, यह पवित्र आत्मा द्वारा अभिषेक की ओर इशारा करता है, जिसके द्वारा सामर्थी लोगों को दूल्हे, यीशु मसीह के स्वागत के लिए तैयार किया जाता है। सच्चे (फिर से पैदा हुए) मसीही जन को मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार किया जाएगा, जबकि नाम के (फिर से पैदा नहीं हुए) मसीही स्वयं को मसीह की वापसी के लिए तैयार नहीं करेंगे (जकर्याह 4:1-6; यूहन्ना 3: 3,5; 2 थिस्सलुनीकियों 2: 13)।

पाँच मूर्ख और पाँच बुद्धिमान कुँवारियाँ। यह बहुत प्रासंगिक है। सभी दस कुँवारियों को उम्मीद थी कि दूल्हा दूसरे दिन आने से पहले आ जाएगा, लेकिन उनमें से कोई भी नहीं जानता था कि वह किस घड़ी आ रहा है। उन सभी के पास मशालें थीं और विवाह के उत्सव में भाग लेने के लिए वे सभी उत्सुक थीं। वे सभी घर के अन्दर इंतजार कर रही थीं, जिसकी अपनी रोशनी थी। सब ऊंघकर सो गयीं। लेकिन उनके बीच मुख्य अंतर यह था कि उनमें से केवल पाँच "बुद्धिमान" थीं, उन्होंने स्वयं को अच्छी तरह से तैयार किया हुआ था। वे दूल्हे के अचानक और अप्रत्याशित रूप से आने के लिए तैयार थीं, वे अपने साथ तेल ले गयीं। अन्य पाँच मूर्ख थीं, क्योंकि वे दूल्हे से मिलने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं थीं! उनके पास मशालें थीं, लेकिन वे अपने साथ तेल नहीं लेकर गयीं। उनकी लापरवाही संवेदनहीन, अदूरदर्शी और अक्षम्य थी!

ऊंघकर सो जाना। यह स्पष्ट है कि जिस घर में वे कुँवारियाँ आई थीं, वहाँ वे ऊंघकर सो गयीं। वे सड़क के किनारे कहीं बाहर नहीं सोयीं, क्योंकि वे धूम मचने के बाद ही नींद में से जागकर बाहर निकलीं। पाँच बुद्धिमान कुँवारियाँ दूल्हे से भेंट करने के लिए निकलीं, जबकि पाँच मूर्ख कुँवारियाँ तेल खरीदने के लिए निकल पड़ीं।

इसका अन्योक्ति के रूप में वर्णन करना सटीक लगता है कि यह मसीही कलीसिया के कमज़ोर होने का प्रतिनिधित्व करता है। हालाँकि, यीशु इस विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। इसके अलावा, अन्त में उनकी व्याख्या या अनुप्रयोग दृष्टान्त के एक अन्य पहलू की ओर इशारा करता है - मसीही कलीसिया के कमज़ोर पड़ने की ओर नहीं, बल्कि मसीहियों की तैयारी की ओर। बुद्धिमान और मूर्ख कुँवारियाँ दोनों सो गयीं। केवल बुद्धिमान कुँवारियाँ ही बिना किसी डर के सो सकती हैं क्योंकि वे तैयार हैं! मूर्ख कुँवारियाँ झूठी सुरक्षा के आश्वासन में रहती हैं।

उन्हें ऐसा लगता है कि वे अपनी आत्मा के लिए पर्याप्त काम कर चुकी हैं, या उन्होंने ऐसा सोचा कि ईश्वरीय मिलाप इतनी जल्दी नहीं होगा, या उन्होंने सोचा कि जीवन में अपने खोए अवसरों को बदलने और पुनर्स्थापित करने के लिए हमेशा पर्याप्त समय होगा। वे कितनी मूर्ख हैं!

आधी रात को धूम मची : "देखो' दूल्हा आ रहा है।" उससे भेंट करने के लिये चलो। धूम ने सभी को चौंका दिया- जागो। यीशु यह नहीं कहते कि किसने धूम मचाई। यह इंतज़ार कर रहे मेहमानों में से एक ने किया होगा, जो जागे हुए थे, या दूल्हे के साथ रहने वाले युवकों में से एक ने चिल्लाया होगा। फिर भी, ऐसा लगता है कि दूल्हा अभी भी घर से काफी दूरी पर था, क्योंकि कुँवारियों को सबसे पहले अपनी मशालों को ठीक करना, तेल डालना, मशालें जलाना पड़ा और दूल्हे से मिलने के लिए अन्धेरी रात में कुछ दूरी पर चलना पड़ा। यह अब तक प्रासंगिक है कि यीशु मसीह अपने दूसरे आगमन के लिए समय लेगा। यह अब तक प्रासंगिक है क्योंकि दूसरा आगमन पूरी तरह से अचानक और अप्रत्याशित रूप से होगा!

बुद्धिमान कुँवारियों ने अपनी मशालों को जलाया, लेकिन मुर्ख कुँवारियों को एहसास हुआ कि वे तैयार नहीं थी। इसे विस्तार से नहीं बताया गया है, लेकिन यह मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार होने के केंद्र बिन्दु या मुख्य सबक को बढ़ावा देते हैं! जब आधी रात को धूम मची, तब वे सभी कुँवारियाँ उठकर अपनी मशालें ठीक करनी लगी। एक बाती जो अभी तक पूरी तरह से सूखी नहीं है, कुछ समयके लिए उज्ज्वल रूप से जल सकती है। लेकिन बाती में बिना तेल के, मशालें जल्द ही बुझ जाएगी। इस समय पर मूर्ख कुँवारियों को एहसास हुआ कि उनके पास तेल नहीं था। उन्होंने महसूस किया कि वे पूरी तरह से तैयार नहीं हैं! पीड़ा के साथ, उन्होंने बुद्धिमान कुँवारियों से तेल माँगा।

बुद्धिमान कुँवारियों ने मूर्ख कुँवारियों को तेल देने से मना कर दिया। इस विवरण की व्याख्या नहीं की गई है, लेकिन यह मूर्ख या बुद्धिमान होने के केंद्र बिंदु या मुख्य संदेश को बढ़ावा देता है। बुद्धिमान कुँवारियों ने मूर्ख कुँवारियों को अपना पास का तेल देने से इनकार कर दिया, इसलिए नहीं कि वे कठोर थीं, बल्कि इसलिए कि उन्हें स्वयं पूरे तेल की आवश्यकता थी। विवाह की बारात बहुत धीमी गति से आगे बढ़ी और वे काफी दूर थी। आधी रात और अंधेरा था। कुँवारियों का काम दूल्हे से भेंट करने के लिए बाहर जाना था और फिर उसे अपने घर वापस लेकर आना था, जहाँ उनकी मशालें अभी भी हर समय उज्ज्वल रूप से जल रही थी। उनका इंकार करना बहुत उचित था। इससे यह साबित हुआ कि बुद्धिमान कुँवारियों ने आगे के विषय में सोचा और अपने कार्य के लिए अच्छी तैयारी की थी। मूर्ख कुँवारियों को अपने लिए यह पता लगना बाकी था कि बाज़ार में आधी रात को तेल खरीदने की कोशिश करना पूरी तरह से निरर्थक प्रयास है। मूर्ख कुँवारियों को तैयार होने में बहुत देर हो गई!

दूल्हा आ पहुँचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ विवाह के घर में चली गईं। मत्ती 25:6 में लिखा है, "आधी रात को धूम मची : "देखो' दूल्हा आ रहा है।" उससे भेंट करने के लिये चलो। (Greek: idou ho numfios, exerchesthe eis apantésin autou). पद 10 में लिखा है : "जब वे मोल लेने को जा रही थीं तो दूल्हा आ पहुँचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ चली गई और द्वार बन्द किया गया।" शब्द : "eis apantésin" यीशु मसीह के दूसरे आगमन को संदर्भित करता है जो अचानक और अप्रत्याशित रूप से और उन लोगों के लिए होगा जो उससे भेंट करने के लिए आये थे और अन्य जो उनसे मिलने नहीं आए थे (तुलना करें मत्ती 24:40-41) ओर ना ही विवाह के भोज में हिस्सा लिया।

प्रेरितों के काम 28:15 में "eis apantésin" शब्द उन विश्वासियों के लिए उपयोग किया गया है जो रोम लौटने से पहले

पौलुस से मिलने और उसका स्वागत करने के लिए गए थे।

1थिस्सलुनीकियों 4:16-17 में "eis apantesin" शब्द उन विश्वासियों के लिए उपयोग किया गया है जिन्हें यीशु मसीह से बादलों में मिलने (Greek: harpazó), उसका स्वागत करने, उसे महिमा देने और उसकी महिमा करना और उस पर अचंभा करने (2थिस्सलुनीकियों 1:7-10) के लिए पुरानी पृथ्वी से उठा लिया गया और यीशु मसीह के साथ (नए यरूशलेम में) नई पृथ्वी पर जाने से पहले (प्रकाशितवाक्य 21:1-2) ताकि वह उसके साथ हमेशा के लिए रह सके (1थिस्सलुनीकियों 4:18; 5:10; प्रकाशितवाक्य 21:3-5), न्याय के दिन उनका न्याय होगा (मत्ती 25:31-33), साथ ही पुरानी पृथ्वी का न्याय भी होगा (मत्ती 24:29-31; रोमियों 8:19-23; 2 पतरस 3:10-13; तुलना करें प्रकाशितवाक्य 6:12-17; 16:17-21; 20:11)!

द्वार बन्द किया गया। यह वास्तविकता के विपरीत था, क्योंकि एक सांसारिक दूल्हा कभी भी मेहमानों को बाहर नहीं करेगा! अब भी पश्चाताप करने और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का अवसर है!

लेकिन यह स्वर्गीय दूल्हे और उसके दूसरे आगमन के बारे में एक दृष्टान्त है! दरवाज़ा बन्द है और फिर से खोला नहीं गया! यह एक प्रासंगिक विवरण है! एक समय आएगा जब परमेश्वर के राज्य का दरवाज़ा निश्चित रूप से बन्द हो जायेगा!

यीशु के *दूसरे आगमन से पहले*, परमेश्वर के राज्य का द्वार दिन और रात खुला रहता है (तुलना करें यूहन्ना 10:7-9)। यह अभी भी अनुग्रह का समय है। संसार में लोगों को अभी भी दूल्हे से मिलने के लिए तैयार होने के लिए बुलाया जाता है, अर्थात् पश्चाताप करने और यीशु मसीह पर विश्वास करने के लिए (मरकुस 1:15; लूका 4:18-19; 13:1-5; 2 कुरिन्थियों 6:1-2)।

लेकिन *दूसरे आगमन पर*, परिवर्तित होने या बचने के लिए कोई और अवसर नहीं मिलेगा (यशायाह 61:2 ए ब)! अन्तिम न्याय के दिन पर यीशु मसीह उन सभी को बाहर कर देगा, जो अभी तक बदले नहीं। यीशु उनसे तब कहेगा, "मैं तुम्हें नहीं जानता!" "मैं आपको उन लोगों के रूप में नहीं पहचानता, जिन्हें मैं अपनी सन्तान कहने से प्रसन्न हूँ!"
(1कुरिन्थियों 8:3; 2 तीमुथियुस 2:19)।

दूसरे आगमन के बाद नई पृथ्वी पर नया यरुशलेम के द्वार (जो अपने अन्तिम चरण में परमेश्वर का राज्य है) कभी बन्द नहीं होंगे। सभी राष्ट्रों के यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले विश्वासी अपने वैभव (महिमा और सम्मान) को इसमें उजागर करेगा (प्रकाशितवाक्य 21:4-27)।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य सन्देश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। *दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है,* अर्थात् एक केन्द्र-बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।
चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है?
ध्यान दें।

मत्ती 25:1-13 में दस कुँवारियों का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में जागते रहने" के बारे में शिक्षा देता है।

दृष्टान्त का मुख्य सन्देश निम्नलिखित है। "मसीहियों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए स्वयं को तैयार करना चाहिए और यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए लगातार जागते और तैयार रहना चाहिए। वह अचानक और अप्रत्याशित रूप से सभी के लिए आ जाएगा! दरवाज़ा बन्द किया जाएगा और बाद में फिर खोला नहीं जाएगा! पश्चाताप करने का कोई दूसरा अवसर नहीं है!"

यहाँ पर ज़ोर अपने जीवन के दौरान यीशु के पास आने वाले व्यक्ति पर नहीं है बल्कि यीशु के दूसरे आगमन पर है। इतिहास में अन्तिम ईश्वरीय मेल-मिलाप का क्षण अचानक और अप्रत्याशित होगा! अन्तिम बुलाहट (मत्ती 24:31; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16), अन्तिम फसल (प्रकाशितवाक्य 14:15-16) और अन्तिम न्याय (प्रकाशितवाक्य 14:18-19) काफी अचानक और अप्रत्याशित होगा!

केवल जो यीशु मसीह के प्रति समर्पण में अपना जीवन व्यतीत करते हैं, वे इसके साथ "एक नई पृथ्वी और एक नए स्वर्ग" के अन्तिम रूप में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे! जो लोग तैयार नहीं हैं, अर्थात्, जिन्होंने अपने हृदयों को आत्मसमर्पित नहीं किया है और जो यीशु मसीह के लिए अपने जीवन को व्यतीत नहीं करते, उन्हें राज्य से बाहर रखा जाएगा!

जागते और तैयार रहना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक हैं। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए अच्छी तरह से तैयार रहते हैं। वे आत्मसंतुष्ट नहीं हैं। वे तैयारी करने में देरी नहीं करते। तैयार होने के लिए पहला कदम यीशु मसीह को उद्धारकर्ता और परमेश्वर के रूप में स्वीकार करना है (यूहन्ना 1:12-13)। इसके बाद, मसीही लगातार सतर्क और यीशु मसीह से मिलने के लिए तैयार रहते हैं। परमेश्वर के राज्य के लोग जानते हैं कि जब एक बार यीशु मसीह वापस आयेगा, तब अनुग्रह का द्वार अपरिवर्तनीय रूप से बन्द कर दिया जाएगा! आप वास्तव में केवल तभी तैयार होते हैं जब आप किसी भी समय यीशु मसीह से मिलने के लिए तैयार होते हैं, जब आपको वर्तमान समय में अपने आचरण पर शर्मिंदगी महसूस नहीं होती और जब आप उसके दूसरे आगमन पर खाली हाथ नहीं खड़े होते हैं।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के प्रत्येक गद्यांशों में से जो कुछ भी पढ़ाया जाता है, उसकी तुलना में दस कुँवारियों का दृष्टान्त क्या सिखाता है?

लूका 13:22-30. यीशु सभी लोगों से अपनी दुष्टता छोड़ने और उसे उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने को कहता है। उन्हें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए अपनी पूरी ताकत से एक लड़ाई को लड़ना चाहिए, यानी कुश्ती करनी चाहिए। उन्हें अपने पापी स्वभाव, संसार की वस्तुओं और शैतान और आत्मसंतुष्टि, शिथिलता और लापरवाही के विरुद्ध भी लड़ना चाहिए।

हर कोई जो मसीह की आज्ञा का पालन करने का प्रयास करता है और संघर्ष करता है, वह निश्चित रूप से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेगा! उद्धार हालाँकि मानव परिश्रम का उत्पाद नहीं है, लेकिन परमेश्वर का अनुग्रह है जो वह उसकी इच्छा पूरी करने वालों के ऊपर करता है (इफिसियों 2:8-9; फिलिप्पियों 2:12-13)।

मत्ती 7:21-23; 8:11-12; 2तीमुथियुस 2:19. यीशु लोगों को चेतावनी देता है कि मसीह कलीसिया या गतिविधियों के साथ जुड़ना परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने आश्वासन नहीं देता है। महत्वपूर्ण यह है कि एक व्यक्ति यीशु मसीह द्वारा उसके अन्दर किये गए कार्यों के द्वारा फिर से पैदा हुआ है और यीशु मसीह ने उसे अपनी सन्तान के रूप में स्वीकार किया है।

ख. अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त

पढ़ें मत्ती 24:32-35. परिशिष्ट 16 देखें।

ग. चौकस दास का दृष्टान्त

पढ़ें लूका 12:35-40. परिशिष्ट 16 देखें।

घ. परमेश्वर के राज्य में जागते रहने के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेशों या शिक्षाओं का सारांश।

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में जागते रहने के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेश या शिक्षाएँ क्या हैं?
यीशु मसीह हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और वह हमें क्या *बनना* या क्या *करना* सिखाते है?
ध्यान दें।

(1) सभी मसीहियों को पता होने चाहिए की परमेश्वर या यीशु मसीह कैसा है।

यीशु मसीह का दूसरा आगमन अचानक और अप्रत्याशित होगा। मसीह की भविष्यद्वाणियाँ उन चीज़ों के विषय में हैं जो उसके पहले और दूसरे आगमन के बीच होंगी। इस तथ्य से मसीहियों को चौकस हो जाना चाहिए और यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार रहना चाहिए!

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें किसके समान बनना है।

मसीहियों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए लगातार तैयार और तत्पर रहना चाहिए। वह अचानक और अप्रत्याशित रूप से आएगा। केवल वे ही जो यीशु मसीह के प्रति समर्पण में अपना जीवन जीते हैं, उनके साथ स्वर्ग और नई पृथ्वी के महिमान्वित रूप में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे! जो लोग तैयार नहीं हैं, अर्थात्, जिन्होंने यीशु मसीह के सामने अपने हृदयों और जीवन को आत्मसमर्पित नहीं किया है, वे राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएंगे!"

(3) सच्चे और नाम के मसीही दोनों समान और अलग होते हैं।

यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले सभी लोग कई मायनों में एक जैसे हैं। दोनों अपने दूल्हे, यीशु मसीह से मिलने के लिए अपने

मार्ग पर हैं।

हालाँकि, कुछ मसीही बुद्धिमान होते हैं। वे सच्चे मसीही हैं। वे अपने पुराने जीवन को छोड़कर यीशु मसीह की ओर फिर चुके हैं और उसे ही अपने जीवन का उद्धारकर्ता और परमेश्वर मानते हैं। वे आश्वस्त हैं कि उन्हें मसीह के उपदेशों पर विश्वास और आज्ञाकारिता में जीवन जीने के लिए दूसरे आगमन के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है।

दूसरे जो स्वयं को "मसीह" कहते हैं वे मूर्ख हैं। उन्हें सच्चे मसीही नहीं कहा जाता है (या नाम के मसीही या रुढ़िवादी मसीही)। यद्यपि वे सभी प्रकार की मसीही सभाओं और गतिविधियों में भाग लेते हैं, फिर भी वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएँगे। क्यों? क्योंकि यीशु मसीह मत्ती 7:21-23 में उनसे कहता है, "मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना!" यह महत्वपूर्ण नहीं है कि आप बपतिस्मा लेते हैं, प्रभु भोज लेते हैं, या मसीही सभाओं और गतिविधियों में भाग लेते हैं, लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि यीशु मसीह आपको व्यक्तिगत रूप से जानता है (तुलना करें यूहन्ना 10:27-28) और उसने आपको अपने चेले के रूप में अपना अनुसरण करने के लिए बुलाया है (तुलना करें लूका 9:57-62)!

अपने दूसरे आगमन पर, यीशु उन सभी लोगों को अपने राज्य से बाहर कर देगा, जो अभी भी वास्तव में परिवर्तित नहीं हुए हैं (अर्थात्, जो उस पर विश्वास नहीं करते हैं)। वह कहता है, "अचम्भा न कर कि मैंने तुझ से कहा, 'तुझे नए सिरे से जन्म लेना आवश्यक है!'" (यूहन्ना 3:7; तुलना करें यूहन्ना 1:12-13; 3:5,16,18,36)। वह उन्हें नहीं पहिचानेगा क्योंकि वह उनसे प्रसन्न है जिसे उसने अपने लिए बुलाया है। ऐसे लोग "भक्ति का भेष तो धरेंगे, लेकिन उसकी शक्ति को नहीं मानेंगे" (2तीमुथियुस 3:5)। वे अपने न्यायी से मिलने के लिए तैयार नहीं हैं!

(4) यीशु के पहले और दूसरे आगमन के बीच एक लंबा समय होगा।

हालाँकि, सदियों से कुछ मसीहियों ने "यीशु मसीह की जल्दी ही वापसी" की उम्मीद की है, मसीह ने स्वयं कहा कि उनके आने में एक लंबा समय लगेगा। "और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा। (मत्ती 24:14), मसीहों के खिलाफ कई अत्याचार होंगे(मत्ती 24:9)। मसीहियों को राज्य का सुसमाचार फैलाने के लिए अपनी प्रतिभा को काम में लाना चाहिए (मत्ती 25:16,19) और जगत के सभी देशों में (लोगों के समूह) यीशु मसीह के चेलों को बनाया जाना चाहिए (मत्ती 28:18-20)!"

(5) यीशु का दूसरा आगमन अचानक, अप्रत्याशित, दृश्यमान और श्रव्य होगा।

दूसरा आगमन दो बार नहीं होगा (महान क्लेश से पहले विश्वासियों या कलीसिया का पहला तथाकथित अन्त और महान क्लेश के अन्त में तथाकथित "मसीह का प्रकाशन")। यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर कोई *रहस्य* नहीं होगा (अदृश्य और अश्रव्य)! हालाँकि यीशु मसीह का केवल दूसरा आगमन अचानक और अप्रत्याशित होगा (लूका 12:40; 1 थिस्सलुनीकियों 5:1-4; 2 पतरस 3:10; प्रकाशितवाक्य 3:3; 16:15), यह प्रत्यक्ष होगा; सृष्टि में सभी लोगों के लिए श्रव्य होगा (मत्ती 24:30-31; 25:6; 26:64; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16; प्रकाशितवाक्य 1:7)!

(6) तैयारी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में स्थानान्तरित नहीं होती है।

बुद्धिमान मसीही मूर्ख मसीहियों को अपनी तैयारी को स्थानांतरित नहीं कर सकते। प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वयं के पाप के लिए व्यक्तिगत रूप से ज़िम्मेदार है (यिर्मयाह 31:29-30; यहेजेकेल 18) और व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह को लेखा देने के लिए ज़िम्मेदार है। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को बदलने और सुसमाचार पर विश्वास करने के लिए ज़िम्मेदार है (मरकुस 1:15; लूका 13:1-

5)। यहां तक कि जिन लोगों ने कभी भी सुसमाचार नहीं सुना या अभी तक उसे समझ नहीं पाए हैं, वे सृष्टि में (रोमियों 1:19-20), अपने हृदय और विवेक में (रोमियों 2:14-16), परमेश्वर के प्रकाशन के प्रति ज़िम्मेदार हैं! सारांश में, इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार और तत्पर होने के लिए ज़िम्मेदार है (मत्ती 25:7-9; भजन 49:7; नीतिवचन 9:12)।

(7) जो तैयार नहीं हैं उनके लिए दूसरा मौका नहीं होगा।

जो लोग तैयार नहीं हैं, अर्थात्, मरने से पहले जिनका उद्धार नहीं हुआ और साथ ही मसीह के दूसरे आगमन पर भी उनका उद्धार नहीं हुआ, उन्हें बचने का एक और मौका कभी नहीं मिलेगा (मत्ती 25:10-12; 10:32-33; 24:37-42; 25:34-46; 2 कुरिन्थियों 5:9-10; गलातियों 6:7-8; 2 थिस्सलुनीकियों 1:8-9) (1 पतरस 3:18-22 स्वर्ग में यीशु मसीह के चढ़ जाने का उल्लेख करता है न कि अधोलोक में उतरने का!)

(8) सभी मसीहियों को जागते और तैयार रहने की आवश्यकता है।

क्योंकि यीशु मसीह के दूसरे आगमन के दिन और घड़ी को कोई नहीं जानता, इसलिए मसीहियों को लगातार जागते और तैयार रहने की आवश्यकता है। (मत्ती 25:13; नीतिवचन 27:1; 2 कुरिन्थियों 6:2; 2 पतरस 1:5-11)।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएँ]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से **छोटी-छोटी प्रार्थना** करने के लिए समूह में **बारियाँ लें**। या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी करें** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "दस कुँवारियों" का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **दानिय्येल 7, 8, 9 और 12** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(19) रोमियों 13:14।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 15:1-33।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन सहिंता 5:3) ।
7. परमेश्वर के राज्य पर प्रचार करने के लिए अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। शांत समय में अपने नोट्स, अपने स्मरण किए हुए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।